६. जरा प्यार से बोलना सीख लीजे

– *रमेश दत्त शर्मा*

परिचय

जन्म : १९३९, जलेसर, एटा (उ.प्र)
मृत्यु: २०१२
परिचय : शर्मा जी पचास वर्षों से पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो और टी.वी. के माध्यम से वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रचार-प्रसार करते रहे। आपको विज्ञान लेखन में दर्जन से अधिक पुरस्कार मिल चुके हैं । आप कक्षा सातवीं-आठवीं से ही स्थानीय मुशायरों में 'चचा जलेसरी' के नाम से शिरकत करने लगे थे ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत गजल के शेरों में शर्मा जी ने प्रेम से बोलना, सही समय पर बोलना, बोलने से पहले विचार करना, आत्मनियंत्रण रखना, मधुरभाषी होना आदि गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित किया है । आपका मानना है कि हमेशा होंठ सीकर बैठना उचित नहीं है । आवश्यकतानुसार आक्रोश प्रकट करना भी जरूरी है ।

कल्पना पल्लवन

'वाणी की मधुरता सामने वाले का मन जीत लेती है ।' इस तथ्य पर अपने विचार लिखो ।

वाणी में शहद घोलना सीख लीजे,
जरा प्यार से बोलना सीख लीजे ।

चुप रहने के, यारों बड़े फायदे हैं,
जुबाँ वक्त पर खोलना सीख लीजे ।

कुछ कहने से पहले जरा सोचिए,
खयालों को खुद तौलना सीख लीजे ।

तू-तड़ाक हो या फिर हो तू-तू मैं-मैं,
अपने आपको टोकना सीख लीजे ।

पटाखे की तरह फटने से पहले,
रोशनी के रंग घोलना सीख लीजे ।

कटु वचन तो सदा बोते हैं काँटे,
मीठी बोली के गुल रोपना सीख लीजे ।

बात बेबात कोई चुभने लगे तो,
बदलकर उसे मोड़ना सीख लीजे ।

ये किसने कहा होंठ सीकर के बैठो,
जरूरत पे मुँह खोलना सीख लीजे ।

——०——

शब्द वाटिका

बेबात = बिना बात
सीकर = सिलकर
जुबाँ = जीभ, मुँह
रोपना = बोना

*** सूचनानुसार कृतियाँ करो :–**

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

कवि ने इन बातों को सीख लेने को कहा है
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]

(२) उत्तर लिखो :

१. काँटे बोने वाले –
२. चुभने वाली –
३. फटने वाले –

(३) चुप रहने के चार फायदे लिखो :

१. ____________
२. ____________
३. ____________
४. ____________

(४) कविता की अंतिम चार पंक्तियों का अर्थ लिखो ।

(५) कविता में आए इस अर्थ के शब्द लिखो :

	अर्थ	शब्द
(१)	मधु	---------
(२)	कड़वे	---------
(३)	विचार	---------
(४)	आवश्यकता	---------

भाषा बिंदु

उपसर्ग/प्रत्यय अलग करके मूल शब्द लिखो :
भारतीय, आस्थावान, व्यक्तित्व, स्नेहिल, बेबात, निरादर, प्रत्येक, सुयोग

उपयोजित लेखन

'यातायात की समस्याएँ एवं उपाय' विषय पर निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

हिंदी साप्ताहिक पत्रिकाएँ/समाचार पत्रों से प्रेरक कथाओं का संकलन करो ।

IXX2J5